प्रकाशन तिथि : 15 अप्रेल, 2025
प्रेषण तिथि : 19 अप्रेल, 2025

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 29 | अंक 03 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

इतिहास और वर्तमान के विभेद को पाटने का मार्ग है संघ

(उदयपुर में माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर प्रारंभ)

जब संसार में, समाज में निराशा छा जाती है और सभी लोग जब किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं तब संसार और समाज को चलाने के लिए, धर्म को प्रतिष्ठापित करने के लिए प्रत्येक युग में भगवान ने स्वयं मनुष्य के रूप में जन्म लेकर इस समाज को, इस राष्ट्र को और इस संसार को राह दिखाई। जब हमारे समाज में भी एक कलुष छा गया, एक अंधेरी रात्रि आ गई, हमारा समाज भटकने लगा तभी एक महामानव ने हमारे समाज में ही जन्म लेकर इस समाज को राह दिखाने का प्रयास किया। वो थे पूज्य तनसिंह जी। उन्होंने जब अपने चारों ओर देखा, अपने इतिहास को पढ़ा, अपनी संस्कृति को जाना और जब समाज की तत्कालीन स्थिति को देखा तो पाया कि जो मेरा इतिहास है, मेरी संस्कृति है और जिस राह पर आज मेरा समाज जा रहा है, उसमें बड़ा विभेद है। इसका क्या कारण है और इस विभेद को समाप्त किस प्रकार किया जा सकता है, इस पर उन्होंने जो चिंतन किया उसी के फलस्वरुप श्री क्षत्रिय युवक संघ का जन्म हुआ। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने उदयपुर स्थित भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर में शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कही। उन्होंने कहा कि संघ के रूप में उन्होंने वह मार्ग दिया जिस पर चलकर हम उस विभेद को, उस अंतर को पाट सकते हैं।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

संघशक्ति में पारिवारिक स्नेहमिलन का आयोजन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में 29 मार्च को माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर के सान्निध्य में पारिवारिक स्नेह मिलन आयोजित हुआ जिसमें जयपुर शहर में रहने वाले स्वयंसेवक सपरिवार उपस्थित रहे। कार्यक्रम में महाकुंभ में शामिल होकर लौटे स्वयंसेवकों ने भी अपने अनुभव साझा किए। उनसे चर्चा करते हुए संरक्षक श्री ने कहा कि जिस प्रकार हम लोग किसी कार्यक्रम के लिए एकत्रित होते हैं, उससे राजपूत समाज की एकता का संदेश प्रसारित होता है, उसी प्रकार कुंभ में भी इतने लोगों के पहुंचने और एकत्रित होने से पूरे विश्व में भारत की राष्ट्रीय एकता का संदेश प्रसारित हुआ है। कार्यक्रम में स्नेहभोज भी रखा गया।

जयपुर में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की तीन दिवसीय अचीवर्स मीट आयोजित

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा अचीवर्स मीट 2025 का आयोजन जयपुर स्थित अनंता रिसोर्ट के आतिथ्य में 4 से 6 अप्रैल तक किया गया जिसमें राजस्थान सहित अन्य राज्यों से राजनीति, व्यवसाय एवं प्रशासन के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि प्राप्त कर नए आयाम स्थापित करने वाले 100 समाजबंधुओं ने भाग लिया। सभी ने अपने अनुभव साझा करते हुए आपसी संपर्क, समझ, सहयोग के द्वारा सशक्त बन कर समाज और राष्ट्र की सेवा के मार्ग पर बढ़ने का संकल्प व्यक्त किया। कार्यक्रम में श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर, संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास तथा फाउंडेशन के संरक्षक श्री महावीर सिंह जी सरवड़ी का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

समाज के विश्वास का प्रकटीकरण है उसकी अपेक्षाएं: संघप्रमुख श्री

श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज के लिए है, समाज संघ के लिए नहीं है। संघ समाज के लिए कार्य करता है और समाज की संघ से अनेक प्रकार की अपेक्षाएं भी हैं। इसका कारण यह है कि समाज को संघ काम करता हुआ दिखाई देता है। जो कार्य करता हुआ दिखाई देता है उसी से अपेक्षाएं की जाती है। यह समाज के संघ के प्रति विश्वास का ही प्रकटीकरण है। चाहे राजनीति का क्षेत्र हो, सामाजिक क्षेत्र हो, धर्म की बात हो या संस्कृति व इतिहास से संबंधित कार्य हो, सबकी नजर संघ की ओर रहती है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सुझावों में उलझ कर न रहें, उन्हें क्रियान्वित करें: सरवड़ी

हम आपस में जय संघ शक्ति कहकर अभिवादन करते हैं। संघ की शक्ति की निश्चित रूप से जय होती है लेकिन वह शक्ति तभी पैदा होती है जब संघ बनता है। हम यहां पर जो चर्चा कर रहे हैं, आज से पहले भी हमारे मन में ऐसे विचार आते रहे होंगे, ऐसी चर्चा भी होती होगी, मन में कई कल्पनाएं भी आती होंगी कि हमें ऐसा कार्य करना चाहिए लेकिन एक साथ बैठकर जब हमने चर्चा प्रारंभ की तो लगा कि ऐसा हो सकता है। **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

प्रासंगिकता ही जीवित रहने की कुंजी: शेखावत

आजादी के बाद में जिस प्रकार से परिस्थितियां बदली उसके बाद में लोकतांत्रिक भारत में राजनीति का परिदृश्य पूरी तरह से एकाएक बदला और उस एकाएक बदलाव का सबसे ज्यादा प्रभाव अगर किसी समाज पर पड़ा तो वह क्षत्रिय समाज पर पड़ा। इसको सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दृष्टिकोण से सोचा जा सकता है। कहा जाता है कि आजादी आने के बाद हमारे हाथ से जागीरें चली गईं, हमारे हाथ से शासन की शक्ति चली गई, हमारा समाज पीछे हो रहा है

(शेष पृष्ठ 2 पर)

बिकती जमीन, छूटता गांव और बिगड़ती संस्कृति: राठौड़

आज भी हमारे प्रदेश में 63 प्रतिशत लोग गांवों में निवास करते हैं और जो गांव में निवास करता है, कृषि पर उसकी आजीविका निर्भर रहती है। इसलिए कृषि भूमि के विक्रय का विषय निश्चित रूप से हम सभी को आपस में जोड़ने वाला है। कृषि भूमि के विक्रय के कारण व्यक्ति अपनी आजीविका के साथ ही अपनी जड़ों से कटता चला जाता है और उसका पलायन गांव से हो जाता है। उसका परिणाम हमारे सामने है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

इतिहास और...

यहां बार-बार कहा जा रहा है कि आओ जरा से बैठकर सोचना शुरू करें, चेतना नई भरें। यह किस चेतना की बात की जा रही है? वह चेतना जो उस धर्म को वापस लाने के लिए, हमारी सामाजिक स्थिति को पुनः उस ऊंचाई पर पहुंचाने के लिए आवश्यक है। लेकिन केवल प्रचार और नारों से धर्म वापस नहीं आता है। इसके लिए हमें उस धर्म को पुनः धारण करना पड़ेगा जिसे हम भूल गए हैं। धारण करने का अर्थ है उसे हमें व्यवहार में लाना पड़ेगा। जब तक वह धर्म हमारे व्यवहार में नहीं आएगा तब तक हम उस धर्म के मार्ग पर चल नहीं सकते। धर्म का जो पथ होता है वह बड़ा कठिन होता है। धर्म के इसी मार्ग पर चलने के लिए हमारे पूर्वजों ने अपने सिर कटाए, तीन-तीन पीढ़ियां एक साथ काम में आईं। धर्म के मार्ग पर चलने के लिए उन्होंने अपने परिवार तक का बलिदान किया। ऐसा करना सहज नहीं होता। संघ का कार्य भी उसी कठिन पथ पर चलने का कार्य है। उन्होंने कहा कि हम इस शिविर में केवल आनंद लेने के लिए नहीं आए हैं। यहां आने का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब इन पांच दिनों का हम संपूर्ण रूप से उपयोग करें। इसका थोड़ा सा भी हिस्सा व्यर्थ नहीं गंवाएं। जैसा संघ कह रहा है, वैसा ही हम करें तब हम धर्म के उस मार्ग पर चलने के लिए तत्पर हो पाएंगे। हमें क्षत्रिय कुल में जन्म मिला है इसलिए क्षत्रिय के धर्म का पालन करना ही हमारा स्वधर्म है। आज सूर्योदय के समय इस स्वागत की वेला में हम इस मार्ग पर चलने का संकल्प तो कर रहे हैं लेकिन क्या हमारा संकल्प इतना प्रबल है कि हम अपने पूर्वजों के उस इतिहास को पुनर्स्थापित कर सकते हैं? जो हमारे राष्ट्र की संस्कृति धूल-धूसरित हो रही है उसको क्या वापस उत्कर्ष पर ला सकते हैं? हमारा समाज जो पतन के कुए में जाने के लिए तत्पर हो रहा है जहां से निकलना संभव नहीं है, क्या हम उसको उसमें गिरने से रोक सकते हैं? यह सब हमको यहां सीखना पड़ेगा। इस प्रश्न को हमको यहां पर हल करना पड़ेगा। यह बिना शक्ति के संभव नहीं है। अपने शरीर, मन और बुद्धि में हमें शक्ति को संचित करना पड़ेगा। उसी शक्ति का सृजन हम यहां करेंगे। उसके लिए आवश्यकता है कि इन पांच दिनों तक आपको अपना ध्यान नहीं रहे बल्कि केवल संघ का ध्यान रहे। आपका घटनायक, पथक शिक्षक और शिक्षण प्रमुख आपको क्या कह रहा है इस बात के अतिरिक्त अन्य सभी बातों को इन पांच दिनों के लिए भूल जाएं। पांच दिन यदि हमने इस प्रकार से एकाग्रचित होकर अपने आप को खपा दिया तो आपमें वह क्षमता जाग जाएगी जिसके रहते आप संसार में किसी भी कार्य में असफल नहीं होंगे। 9 से 14 अप्रैल तक आयोजित इस शिविर में उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, बाड़मेर, जोधपुर, जालौर, पाली, अजमेर आदि जिलों के 130 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

जयपुर में...

4 अप्रैल की शाम को परिचय सत्र एवं भोजन के साथ अनौपचारिक चर्चा हुई। 5 अप्रैल को संघ परंपरा के अनुसार कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्य तन सिंह जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इसके पश्चात कार्यक्रम की भूमिका, फाउंडेशन का परिचय एवं कार्ययोजना व फाउंडेशन की संघ के संबद्धता के बारे में जानकारी देते हुए संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने बताया कि क्षत्रिय के स्वाभाविक गुण शौर्य, तेज, धैर्य, त्याग, दक्षता, दानशीलता, ईश्वरीय भाव बताए हैं। लेकिन आज की स्थिति देखें तो यह सभी गुण हमारी जाति में क्षीण हो गए हैं। इस स्थिति पर पूज्य तनसिंह जी ने चिंतन किया और उन्होंने पाया कि समाज के उत्कर्ष के लिए हम बाहर से चाहे कितने ही प्रयास करें, वे सफल नहीं हो सकते क्योंकि किसी पेड़ की पत्तियों को, फूलों व टहनियों को सींचने के प्रयास करने के बजाय उसकी जड़ों को सींचने से ही उसकी वृद्धि होती है। इसीलिए उन्होंने हमारी जाति में इन गुणों को पुनः जागृत करने के लिए कार्य योजना प्रस्तुत की जिसका नाम श्री क्षत्रिय युवक संघ है। पूज्य तनसिंह जी द्वारा दिए गए दर्शन के अनुसार समाज की सकारात्मक क्रियाशीलता को बढ़ाने के दृष्टिकोण से श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की स्थापना की गई। फाउंडेशन सकारात्मक दृष्टिकोण के समाजबंधु जो अपने प्रारंभिक जीवन काल में संघ के संपर्क में नहीं आ पाए उन्हें संघ के संपर्क में लाने का कार्य करता है। साथ ही समाज में संविधान और वर्तमान व्यवस्था के प्रति स्वीकार भाव को बढ़ाने और उस व्यवस्था के लाभ समाज तक पहुंचाने के लिए भी कार्य कर रहा है। इसके पश्चात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास ने संघदर्शन पर अपनी बात कही। अगले सत्र में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में व्यापारिक संभावनाएं विषय पर श्री प्रदीप राठौड़ (व्यवसायी, अंतरिक्ष प्रोद्योगिकी) ने अपनी बात कही। अगले चरण में केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह जी शेखावत ने 'राजनीति - संभावनाओं का क्षेत्र (अवसर और संभावनाएं)' विषय पर उद्बोधन दिया। 'कृषि भूमि की बिक्री और गांवों से पलायन - कारण, परिणाम और समाधान' विषय पर श्री राजेंद्र राठौड़ (पूर्व नेता प्रतिपक्ष) ने अपनी बात कही। अगले सत्र में एयू बैंक के संस्थापक श्री संजय अग्रवाल ने अपने संघर्ष और सफलता की कहानी अपने शब्दों में बताई। शाम को प्रतिभागियों सहित अन्य समाजबंधुओं के साथ सहभोज का आयोजन हुआ। जिसमें जयपुर में रहने वाले राजनीति, चिकित्सा, व्यापार आदि से जुड़े गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। आरटीडीसी के पूर्व चैयरमेन श्री धर्मेंद्र राठौड़ भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। 6 अप्रैल को प्रातःकालीन सत्र में समाज में शिक्षा, रोजगार, कृषि तकनीक, व्यापार आदि से जुड़े विषयों पर श्री नरेश कुमार (पूर्व मुख्य सचिव, दिल्ली) ने अनौपचारिक चर्चा की। उन्होंने अपने प्रशासनिक जीवन के अनुभव साझा किए और समाज में बालिका शिक्षा पर विशेष बल देने की आवश्यकता जताई। अगले सत्र में शिक्षा से सशक्तिकरण विषय पर श्री बी सिंह (Ex. IES, संस्थापक - Made Easy & Next IAS) ने अपनी बात रखी। इसके पश्चात सभी प्रतिभागियों ने कार्यक्रम का अनुभव बताया एवं आगे की कार्ययोजना बनाकर विभिन्न जिम्मेदारियां तय की गई। अंत में माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी (संरक्षक, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन) ने अपना आशीर्वचन प्रदान किया। पूरे आयोजन की व्यवस्था का दायित्व अनंता रिसोर्ट के मालिक श्री रविन्द्र प्रताप सिंह परिहार व उनकी टीम ने संभाला।

बिकती जमीन...

बढ़ती जनसंख्या, घटती जोत और खेतों से दूर होता हमारा आचरण हमारे सामने गंभीर प्रश्न के रूप में प्रस्तुत है। जिस भूमि के लिए हमारे पूर्वजों ने लड़ाइयां लड़ी, जिस धरा की रक्षा के लिए वे धड़ कटाने की बात करते थे, आज उस भूमि को हम स्वयं ही खो रहे हैं। 1952 में भू सुधार और जागीरदार उन्मूलन कानून आया और उसके बाद 1955 में भूमि राजस्व कानून आया और 18000 जागीरदार भूमिहीन बन गए। उस समय पूज्य तनसिंह जी और आयुवान सिंह जी आदि ने भूस्वामी आंदोलन खड़ा किया। वह आंदोलन इतना प्रबल था कि स्वयं प्रधानमंत्री नेहरू को मध्यस्थता के लिए आना पड़ा। नेहरू अवार्ड के कारण जागीरदारों को मुआवजे के रूप में भूमि मिलनी प्रारंभ हुई। यह छोटी बात नहीं थी। उस समय हमारे पूर्वजों को भूमि की कीमत मालूम थी। लेकिन समय के साथ हमने हमारी जमीनों को बेचना प्रारंभ कर दिया। हमें विचार करना होगा कि हमारी जमीनें क्यों बिक रही हैं? क्योंकि आज हमारी सामूहिकता खत्म होती जा रही है। संयुक्त परिवारों का टूटना भी इसका एक मुख्य कारण है। जमीन बिकने की इस समस्या का समाधान तभी हो सकता है जब हम गांव के स्तर पर समिति बनाकर इस प्रवृत्ति को रोकने का प्रयास करें। हमारी सामूहिकता की प्रवृत्ति को हमें फिर से जीवित करना होगा। बिकती जमीन, छूटता गांव और बिगड़ती हमारी संस्कृति यह हम सभी के लिए चिंता का विषय होना चाहिए।

प्रासंगिकता ही... लेकिन मेरा मानना है कि इस आजादी ने सामान्य राजपूत को सम्मान के साथ जीने का अधिकार दिया। सामान्य राजपूत को दूसरे समाजों की तरह सत्ता में भागीदारी का अवसर मिला। यह जो आजादी की ताकत है इसको हमें समझने की आवश्यकता है और हमें इसके अनुरूप आचरण और व्यवहार करना पड़ेगा। हम अगर ऐसा नहीं कर पाए तो हम समाज का लाभ नहीं कर पाएंगे। आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था में हमारे समाज की उपयोगिता क्या हो सकती है और कैसे हम अपने आप को प्रासंगिक बनाएं, इस पर विचार करने की आवश्यकता है। पिछले वर्षों में निश्चित रूप से समाज की सोच में बदलाव हुआ है। श्री प्रताप फाउंडेशन और श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ने जिस प्रकार से संगठित रूप से प्रयास किए हैं उससे हमारी चेतना में अभिवृद्धि हुई है। लेकिन इस चेतना के अभाव का जो दौर था उसमें जो कुछ न्यूनताएं रही और जो कुछ समाज पीछे रह गया इसका आकलन करके उस दूरी को पाटने के लिए हमें और अधिक काम करने की आवश्यकता है। जो कुछ चिंतन सामाजिक मंचों पर किया जा रहा है उन्हें धरातल पर उतारने के लिए भी पहल करनी होगी। समाज और समाज की संस्थाओं को आज के इस राजनीतिक संभावनाओं के दौर में युवाओं में बढ़ रहे आलोचनात्मक और नकारात्मक दृष्टिकोण को रोकने के लिए भी काम करना पड़ेगा। यदि इसका निषेध नहीं किया गया तो आने वाले समय में व्यापक स्तर पर इसका नुकसान होने वाला है। प्रासंगिक बने रहना ही जीवित रहने की कुंजी है। जो अप्रासंगिक और अनुपयोगी हो जाएगा उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। हम उपयोगी थे क्योंकि सबकी रक्षा करने का दायित्व हम पर था। अब वह उपादेयता भी समाप्त हो गई है और अब वह परिदृश्य भी बदल गया है। इस परिदृश्य में हम अपने आप को किस प्रकार से प्रासंगिक बनाएं, इस पर भी हमको विचार करके कार्य करना है तभी हम और अधिक सशक्त भी होंगे और सफल भी होंगे।

समाज के... लेकिन संघ की भी कुछ क्षमताएं हैं जिनके अनुसार ही संघ काम कर सकता है। इसलिए अपने मूल सिद्धांत को बनाए रखते हुए जो इतर काम है उन्हें भी करने का प्रयास संघ अपनी क्षमतानुसार करता है। आज के समय में सामान्यतः तुरंत दिखाई देने वाले परिणाम पर ही सभी का ध्यान रहता है लेकिन श्री क्षत्रिय युवक संघ का जो कार्य है उसका परिणाम तुरंत आता हुआ नजर नहीं आता। फिर भी समाज की अपेक्षाओं का सम्मान करते हुए समाज की तात्कालिक समस्याओं के समाधान के लिए इस प्रकार के आयोजन भी संघ द्वारा उसके आनुषंगिक संगठनों के माध्यम से किए जा रहे हैं। संघ समाज चरित्र में विश्वास करता है और पूज्य तनसिंह जी का संघ के निर्माण के पीछे जो चिंतन था वह यही था कि व्यक्ति अपने से आगे बढ़कर समाज के बारे में सोचना प्रारंभ करें। संघ का सारा काम समाज चरित्र के निर्माण के लिए ही है। आओ हम साथ चलें, साथ विचार करें, साथ में मिलकर सब काम करें। यही श्री क्षत्रिय युवक संघ की विधा है, इसी के ऊपर चलकर हम पूज्य तनसिंह जी के दर्शन को समझ सकते हैं।

सुझावों में... संघ की शक्ति बनाना बहुत आवश्यक है लेकिन यह बहुत मुश्किल कार्य है। श्री क्षत्रिय युवक संघ जब तनसिंह जी ने प्रारंभ किया था तब राजाओं, जागीरदारों, सामाजिक नेताओं, राजनीतिक नेताओं आदि सभी ने विरोध किया लेकिन यदि वे उस विरोध को देखकर रुक जाते तो आज जो स्थिति है वह नहीं बनती। उस विरोध के बावजूद भी वे चलते रहे और इस प्रकार से जब कोई परिश्रम करता है और जब प्रेम के साथ लोगों को जोडा जाता है तब जाकर संघ बनता है। हम आज यहां बैठे हैं, लेकिन इसी से ऐसा ना मान लें कि हम संगठित हो गए हैं। संगठित होना बड़ा मुश्किल है पर हमारा प्रयास यह रहे कि हम संगठित हो जाएं। अगर हम संगठित होंगे तो निश्चित रूप से समाज की जय होगी। इसलिए जिस किसी भी क्षेत्र में हम काम कर सकते हैं उस क्षेत्र में समाज की सेवा करना प्रारंभ करें। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को नहीं निभाएं। उन्हें भी निभाना है लेकिन हमारी प्राथमिकता यह रहे कि परिवार की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करके हम जो कुछ अतिरिक्त कर सकते हैं उसे समाज की सेवा में लगाएं। इस प्रकार के भाव के साथ यदि हम चलते रहेंगे तो निश्चित रूप से संगठन की शक्ति जागृत होगी। समाज के प्रति हम सभी का दायित्व है इसलिए हम सबको मिलकर कार्य करना है। सुझाव तो बहुत लोग देते हैं लेकिन उन सुझावों के क्रियान्वयन के लिए दूसरों पर निर्भर रहने वाले व्यक्ति कभी कुछ नहीं कर सकते। जो कार्य प्रारंभ करते हैं उन्हें मुश्किलें भी आती है लेकिन मुश्किलों को दूर करते हुए निरंतर बढ़ते जाते हैं तो सफलता अवश्य मिलती है। केवल सुझावों में उलझने की बजाय हमें यह विचार करना चाहिए कि जब तक मैं स्वयं नहीं सुधरूंगा तब तक मैं संसार को नहीं सुधार सकता। मैं जब तक समाज की सेवा नहीं करूंगा तब तक मैं दूसरों को समाज की सेवा की बात कहने का अधिकारी नहीं हूं। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो कोई हमारे साथ नहीं आएगा, कोई हमारी बात नहीं मानेगा। इसलिए हमारा अपनी कौम के प्रति जो कर्तव्य है उसको हम उचित तरह से निभाएंगे, ऐसी भगवान से प्रार्थना करें। जब कहीं भी अवसर मिले, आपस में मिल बैठकर चर्चा करते रहें। लेकिन एक और बात को समझना भी आवश्यक है। आज यहां आर्थिक विकास की बात हो रही है, अधिकारी बनने की बात हो रही है, राजनेता बनने की बात हो रही है, लेकिन संस्कारों की बात नहीं हो रही है। अगर संस्कार हमारे अंदर नहीं होंगे तो क्षत्रिय के रूप में हमारी पहचान ही नहीं होगी। तब हम अधिकारी और राजनेता बनकर भी गलत काम ही करेंगे और तब समाज की बदनामी होगी। इसलिए हमको अपने आप को ऐसा बनाना है कि हम किसी भी स्थिति में कोई गलत काम नहीं करेंगे। अपने चरित्र को हम बनाए रखेंगे तभी हमारे समाज की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

आकोली में सम्राट विक्रमादित्य की प्रतिमा का अनावरण

(विभिन्न स्थानों पर मनाई सम्राट विक्रमादित्य की जयंती)

जालौर जिले के आकोली गांव में सम्राट वीर विक्रमादित्य की ग्यारह फीट ऊंची अष्टधातु से निर्मित प्रतिमा का अनावरण चैत्र शुक्ला प्रतिपदा (30 मार्च) को समारोह पूर्वक किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पोकरण विधायक प्रताप पुरी ने कहा कि सम्राट विक्रमादित्य भारतीय इतिहास के महान नायक हैं और उनके आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं। उनकी जयंती मनाने की सच्ची सार्थकता इसी में है कि हम भारतीय संस्कृति के सनातन जीवन मूल्यों को अपने जीवन में धारण करें और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें। राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जागेश्वर गर्ग ने कहा कि सम्राट विक्रमादित्य को उनकी न्यायप्रियता के लिए जाना जाता है। उन्होंने बिना किसी भेदभाव के सभी को साथ लेकर शासन किया और इसीलिए जनता के हृदय में अपना अमर स्थान बनाया। हम सभी को उनसे प्रेरणा लेकर उनके आदर्शों पर चलना चाहिए। आहोर विधायक छगन सिंह राजपुरोहित ने कहा कि यह हम सभी के लिए गौरव की बात है कि भारतीय संस्कृति के ऐसे महान नायक की प्रतिमा आकोली गांव में स्थापित की गई है। इसके लिए सभी आकोली ग्रामवासी प्रशंसा और बधाई के पात्र हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने सम्राट विक्रमादित्य के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वीर विक्रमादित्य अपने श्रेष्ठ चरित्र के कारण भारतीय जनमानस में पिछले दो हजार वर्षों से अपनी उपस्थिति बनाए हुए हैं। रामायण के नायक भगवान राम और महाभारत के नायक भगवान श्री कृष्ण के बाद यदि भारतीय जनमानस में सबसे अधिक किसी को स्मरण किया जाता है, वंदन किया जाता है तो वह सम्राट विक्रमादित्य है। सम्राट विक्रमादित्य के काल में अनेक अन्य महापुरुष हुए। उनसे थोड़ा ही पहले चंद्रगुप्त मौर्य हुए जिन्होंने सिकंदर को भारत से लौटने के लिए मजबूर किया, अशोक महान हुए, समुद्रगुप्त हुए, कनिष्क हुए, गौतमीपुत्र शातकर्णी हुए, चंद्रगुप्त द्वितीय और हर्षवर्धन हुए। ये सभी शासक केवल इतिहासकारों के चिंतन का विषय है लेकिन विक्रमादित्य को जन-जन द्वारा आज भी याद किया जाता है, यह उनकी महानता का प्रतिबिंब है। विक्रमादित्य ने उस समय के सबसे बड़े आततायी शकों के विरुद्ध संघर्ष करके उनका उन्मूलन कर दिया और उन्हें ईरान तक खदेड़ दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि अगले 135 वर्षों तक भारत पर किसी ने आक्रमण करने का साहस नहीं किया। विक्रमादित्य ने 57 ईसवी पूर्व विक्रम संवत् प्रारंभ किया था। उस समय उसका नाम विक्रम संवत नहीं बल्कि कृत संवत था जिसका अर्थ होता है सतयुग। कालांतर में उसे मालव संवत कहा गया क्योंकि विक्रमादित्य मालव गणराज्य के अधिपति थे। नवी शताब्दी के बाद में उस संवत को विक्रम संवत कहा जाने लगा क्योंकि विक्रमादित्य का व्यक्तित्व इतना बड़ा था कि उनका नाम सतयुग का पर्यायवाची बन गया। जिस प्रकार भगवान कृष्ण ने समस्त सात्विक शक्तियों को संगठित करके महाभारत का युद्ध लड़ा उसी प्रकार से विक्रमादित्य ने भी उस समय के समस्त भारत के शासको को संगठित करके शकों से संघर्ष किया। सिंहल द्वीप से लेकर कश्मीर तक और सौराष्ट्र से लेकर बंगाल तक के शासको को उन्होंने अपने साथ लिया। उन्होंने किसी को जीता नहीं बल्कि सभी को अपना साथी बनाया। विक्रमादित्य के शासन का मूल आधार लोकरंजन था, मनोरंजन नहीं था। इसलिए उन्हें भगवान राम की भांति आदर्श शासक माना जाता है। कला, साहित्य, वास्तु आदि के वे आदर्श संरक्षक थे। कालिदास, वराह मिहिर और क्षपणक जैसे महान साहित्यकार विक्रमादित्य के नवरत्नों में थे। उनका व्यक्तित्व इतना महान था कि उनके बाद के शासकों ने अपनी महानता दिखाने के लिए अपने नाम के साथ विक्रमादित्य की उपाधि धारण करना प्रारंभ की। विक्रमादित्य स्वयं शैव पंथ के अनुयायी थे लेकिन उनके शासनकाल में शाक्त पंथ, वैष्णव पंथ, जैन पंथ, बौद्ध पंथ आदि भी निर्बाध रूप से प्रसारित हुए, यह उनके समभाव को दशार्ता है। ऐसे शासक के प्रति हमारा गौरव का भाव निश्चित रूप से होना चाहिए लेकिन इतिहास केवल गौरव करने के लिए नहीं होता बल्कि इतिहास शिक्षक होता है, प्रेरणा का विषय होता है, मार्गदर्शन का स्रोत होता है। जो कौम, जो लोग, जो राष्ट्र अपने इतिहास पर केवल गौरव करते हैं और उनसे प्रेरणा नहीं लेते, वहां इतिहास बनना बंद हो जाता है। इसलिए यह मूर्ति यहां लगाना तभी सार्थक होगा जब इस मूर्ति के सामने खड़े होकर हम विक्रमादित्य से लोकरंजन की, दायित्वबोध की प्रेरणा ले सकें। गंगा सिंह रामसीन ने सभी का आभार व्यक्त किया। राजेंद्र सिंह आकोली ने मंच संचालन किया। कार्यक्रम विजय जयरतन सुरीश्वर जी, लेटा महंत रणछोड़ भारती जी, जागनाथ महंत महेंद्र भारती जी, कटकेश्वर महंत कुलदीप भारती जी, आनंदनाथ महाराज, विष्णु स्वरूप महाराज, साध्वी सत्यानंद जी, नवाराम भोपाजी आदि संतजनों का भी सान्निध्य रहा। सम्राट वीर विक्रमादित्य स्मारक निर्माण समिति के तत्वावधान में आयोजित हुए इस कार्यक्रम में आकोली, बागरा, देलदरी, सांथु, सरत, नारणावास, आड़वाड़ा, मांडोली, बिबलसर, सियाणा, रामसीन, नून, कोलर, सिकवाड़ा, डूडसी, धानपुर, दीगाव आदि गांवों से लोग सम्मिलित हुए। गुजरात के सूरत में राष्ट्रवीर दुर्गादास शाखा में विक्रमी संवत् नववर्ष - 2082 कार्यक्रम सामूहिक शाखा के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन भवानीसिंह माडपुरिया ने किया। सम्भाग प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा ने सम्राट विक्रमादित्य के जीवन चरित्र के बारे में बताया और कहा कि सम्राट विक्रमादित्य के नाम पर ही विक्रम संवत् प्रारंभ हुआ। भारतीय संस्कृति का नव वर्ष आज के दिन ही प्रारंभ होता है। कार्यक्रम में सूरत सम्भाग की सभी शाखाओं के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान सामूहिक हवन भी किया गया। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

शिक्षा से सशक्तिकरण का मार्ग अपनाएं: श्री बी.सिंह

हमारे समाज में जो समस्याएं हैं उसके पीछे एक आधारभूत कारण यह भी है कि हमें प्रारंभ से एक ऐसा मार्गदर्शन नहीं मिलता जो हमें नए रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करे। आज की शिक्षा के चार महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। पहला पड़ाव है आठवीं कक्षा के पश्चात। इस पड़ाव पर विद्यार्थी को सही दिशा की आवश्यकता है। नवीं और दसवीं कक्षा प्रतियोगिता परीक्षा के लिए नींव का कार्य करती है। दूसरा पड़ाव है जब विद्यार्थी दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करता है। तीसरा पड़ाव 12वीं के पश्चात और चौथा पड़ाव स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात आता है। इन सभी पड़ावों पर विद्यार्थी को उचित मार्गदर्शन मिलना चाहिए। जो मेधावी विद्यार्थी हैं उन्हें आधुनिक शिक्षा जैसे तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा की ओर दिशा देने की आवश्यकता है। जो औसत विद्यार्थी हैं उन्हें कला, कृषि विज्ञान आदि विषयों की ओर दिशा दी जानी चाहिए। विद्यार्थी की योग्यता जांचने के लिए प्रतिभा खोज परीक्षा आयोजित की जा सकती है। इसके पश्चात काउंसलिंग सेशन और सेमिनार आयोजित किए जाएं जिनमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया जाए। जो आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थी हैं उनको भी सहयोग किया जाए। कंप्यूटर साक्षरता भी आज के समय की मांग है। इसके माध्यम से हम अपने बच्चों की दक्षता को बढ़ा सकते हैं। बच्चों को कार्य विभाजन और व्यवस्थित ढंग से अध्ययन करने का अभ्यास करना भी आवश्यक है। हमें यह भी समझना पड़ेगा कि राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं जो सीमित होनी चाहिए वे हमारे समाज में असीमित हो गई हैं। इसे सीमित करने के लिए आवश्यक है कि राजनीति में जो लोग हैं हम उनका सहयोग करें लेकिन हम स्वयं राजनीतिज्ञ बनने की कोशिश ना करें। हम अपने आप को दूसरे तरीके से भी सशक्त बनाएं। शक्ति का वास्तविक केंद्र आर्थिक सशक्तिकरण है। कृषि क्षेत्र सबसे कम गति से वृद्धि करने वाला क्षेत्र है जबकि उद्योग, तकनीक, सेवा आदि क्षेत्रों में वृद्धि की गति बहुत अधिक तीव्र है। इसलिए हमें केवल कृषि तक सीमित न रहकर अन्य क्षेत्रों में भी कदम बढ़ाने होंगे।

(अचीवर्स मीट में उद्बोधन का संपादित अंश)

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में व्यापारिक संभावनाएं: श्री प्रदीप राठौड़

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में हमारी आत्मनिर्भरता हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से अत्यंत आवश्यक है लेकिन इसमें व्यापारिक संभावनाएं भी अपार हैं। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अपने देश में विकास से ही हम आत्मनिर्भर भारत का निर्माण कर सकेंगे। 2019 में भारत ने एंटी सैटलाइट मिशन लॉन्च किया था जिससे भारत ने दुश्मन के उपग्रह को अंतरिक्ष में ही नष्ट करने की क्षमता प्राप्त कर ली थी। भारत ने 2025 में अपना डॉकिंग स्टेशन भी अंतरिक्ष में स्थापित कर लिया है जहां हम अपने उपग्रह की मरम्मत कर सकते हैं। आने वाले समय में केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में उपग्रहों की संख्या बहुत अधिक बढ़ने वाली है। इसलिए कम लागत के उपग्रह निर्माण, ग्राउंड स्टेशन के निर्माण, उपग्रह निर्माण की सहायक तकनीकी के विकास आदि के क्षेत्र में आने वाले समय में अच्छी संभावनाएं उपलब्ध रहेंगी। यद्यपि अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी से संबंधित व्यवसाय में अनेक प्रकार की चुनौतियां भी है लेकिन दीर्घकालीन योजना बनाकर सही समय पर किया गया निवेश निश्चित रूप से आने वाले समय में अच्छा परिणाम देगा।

(अचीवर्स मीट में उद्बोधन का संपादित अंश)

भावनगर में चैत्र नवरात्रि के निमित्त यज्ञ का आयोजन

गुजरात के गोहिलवाड़ संभाग के भावनगर प्रांत की भक्ति नगर शाखा में चैत्र नवरात्र के निमित्त 30 मार्च से 6 अप्रैल तक प्रतिदिन अलग-अलग राजपूत घरों में जाकर यज्ञ किए गए। 6 अप्रैल को सामूहिक यज्ञ का आयोजन हुआ एवं रामनवमी भी मनाई गई।

संपादकीय

सहयोग का सूत्र : त्यागपूर्ण आचरण

'संघे शक्ति कलौयुगे' श्लोकांश का प्रयोग संगठन की शक्ति के महत्व को प्रकट करने के लिए प्रायः किया जाता है। निश्चित रूप से इस युग में संघ अर्थात संगठन की शक्ति का महत्त्व सर्वाधिक है और इस बात को अनुभव करके ही विभिन्न व्यक्ति और संस्थाएं अपने समाज के सदस्यों को संगठित होने का आह्वान उक्त श्लोकांश के माध्यम से बार-बार करते दिखाई पड़ते हैं। हमारे समाज में भी संगठन की शक्ति के महत्व को बार-बार विभिन्न माध्यमों एवं मंचों पर बताया जाता है। सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय प्रत्येक व्यक्ति या संस्था द्वारा संगठन की इस शक्ति की चाह की जाती है क्योंकि इस शक्ति के अभाव में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करना संभव नहीं है, यह सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय होने वाले सभी लोगों का अनुभव रहता है। संगठन की शक्ति की यह मांग वास्तव में सहयोग की मांग है जो सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय व्यक्ति अथवा संस्थाएं अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए चाहते हैं। लेकिन सामान्यतया देखने में यही आता है कि अधिकांशतः ऐसे व्यक्ति व संस्थाएं उस सहयोग को जुटाने में असफल रहते हैं और यह अभाव आगे चलकर कई बार उन्हें कुंठाग्रस्त भी बना देता है। इसीलिए समाज में अनेक व्यक्ति और संस्थाएं प्रायः यह शिकायत प्रकट करते हैं कि समाज उनका सहयोग नहीं करता और यह समाज कभी संगठित नहीं हो सकता। किंतु क्या हमारे समाज के संबंध में यह आक्षेप सत्य है? क्या समाज का सहयोग उन्हें नहीं मिलता जो समाज के हित में स्वयं को नियोजित करने के लिए तैयार होते हैं? क्या समाज में आ गई व्याधियों को दूर करने के लिए उद्धत होने वाले कर्त्तव्यनिष्ठ कर्मवीरों को समाज सहयोग रूपी आशीर्वाद प्रदान नहीं करता है? यदि हम चिंतन करें और समाज की सेवा की राह पर अपने को खपाने वाले पथिकों के जीवन को देखें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि समाज तो सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर है किंतु उस सहयोग को धारण करने के लिए योग्य पात्रों का ही अभाव रहता है।

जो व्यक्ति और संस्थाएं समाज के सहयोग के अभाव की शिकायत करते हैं वस्तुतः वे सहयोग के सूत्र को पकड़ नहीं पाते और इसी कारण से अपने उद्देश्य के लिए वांछित सहयोग जुटाने में असफल रहते हैं। सहयोग निश्चित रूप से शक्ति का स्वरूप है लेकिन सहयोग की उस शक्ति को प्राप्त करने का सूत्र बहुत अधिक सूक्ष्म है। इसीलिए इस सूत्र को पहचानना, उसे पकड़ना और उसे संभालना बहुत कठिन है। यह सूत्र है त्यागपूर्ण आचरण का। संगठन अर्थात सहयोग इस युग की प्रधान शक्ति है और इसीलिए हर कोई उस शक्ति का अधिपति बनना चाहता है लेकिन त्यागपूर्ण आचरण के सूत्र के बिना सच्चा और स्थाई सहयोग नहीं जुटाया जा सकता। इसीलिए हम देखते हैं कि जहां कहीं संगठन की शक्ति बनती दिखाई भी पड़ती है वह इतनी अधिक अस्थिर और अप्रभावी होती है कि परिस्थितियों की प्रतिकूलता ही नहीं, बल्कि केवल समय का सामान्य प्रवाह ही उसे ढहाते हुए चला जाता है। राजनीतिक क्षेत्र में तो ऐसा होते हुए प्रायः ही दिखाई पड़ता है। कारण यही है कि वह सहयोग त्यागपूर्ण आचरण के सूत्र से नहीं जुटाया गया था बल्कि अन्य किसी उपाय के माध्यम से यथा - अधिकारों और भोग का लोभ दिखाकर, घृणा और ईर्ष्या की प्रवृत्ति को भड़काकर अथवा अहंकार और भय का दोहन करके जुटाया गया था। इसीलिए जिन्हें समाज का वास्तविक सहयोग जुटाना है उनके लिए एकमात्र उपाय त्यागपूर्ण आचरण ही है। हम यदि हमारे पूर्वजों के जीवन को देखें तो भी यही पाएंगे कि सामान्यजन का जो सम्मान, विश्वास और सहयोग उनको प्राप्त था वह उनके त्यागपूर्ण आचरण के कारण ही था। त्यागपूर्ण आचरण ही आचरणकर्ता के व्यक्तित्व में वह प्रभाव पैदा करता है कि सहयोग स्वयं ही उसकी ओर खिंचा चला आता है। इस त्यागपूर्ण आचरण के अभाव में यदि केवल बाहरी खटकों जैसे भाषण, लेखन, पहनावे आदि से ही आकर्षण पैदा कर सहयोग जुटाने का प्रयास किया जाए, जैसा कि आजकल अधिकांशतया किया जा रहा है, तो उसका निष्फल होना अवश्यंभावी है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ का यह अनुभव है कि समाज सदैव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर है जो उसके सहयोग की शक्ति को धारण करने के सच्चे पात्र हों। यह पात्रता केवल त्यागपूर्ण आचरण से ही प्राप्त की जा सकती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के विरोधी भी प्रायः इस बात को स्वीकार करते हैं कि संघ के प्रति इसके स्वयंसेवकों का समर्पण और अनुशासन अद्वितीय है और समाज का विश्वास और सहयोग संघ को सदैव प्राप्त होता है। वे विरोधी यह भी भाव व्यक्त करते हैं कि यदि ऐसी शक्ति हमारे पास होती तो हम समाज के लिए बहुत कुछ प्राप्त कर लेते। लेकिन यहां पर वे यह चिंतन नहीं करते कि समाज के लिए बहुत कुछ प्राप्त करने से पहले वे अपने लिए यह सहयोग की शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं और वह भी बिना उसकी कीमत चुकाए। वे यह नहीं समझ पाते कि समाज तो उनको भी सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर है यदि वे त्यागपूर्ण आचरण के द्वारा उसकी पात्रता प्राप्त कर लें। लेकिन वे जिन भोग और प्राप्तियों की बात करते हैं उनसे तो केवल स्वार्थ ही जुटता है सहयोग नहीं। इसीलिए पूज्य श्री तनसिंह जी अपनी पुस्तक 'एक भिखारी की आत्मकथा' में लिखते हैं - 'किसी कौम में क्रांति लानी हो, उसका दृष्टिकोण बदलना हो, तो उसकी नींव में त्याग भरना पड़ेगा। भोग वहां नहीं भरा जा सकता।' अतः समाज के सच्चे सहयोग के आकांक्षी को सर्वप्रथम अपने जीवन में त्याग को प्रतिष्ठापित करना पड़ेगा। यह कार्य अत्यंत कठिन है क्योंकि इसके लिए अपने स्वयं के अहंकार, महत्वाकांक्षाओं आदि पर विजय प्राप्त करनी पड़ती है, आत्मचिंतन द्वारा अपने विकारों को दूर करने की साधना में लगना पड़ता है, फलासक्ति से ऊपर उठकर निष्काम कर्म को जीवन का आधार बनाना पड़ता है, व्यक्तिगत मान-अपमान को समाज के चरणों में समर्पित करना पड़ता है। जो कोई ऐसा करता है उसे समाज का सहयोग निश्चित रूप से प्राप्त होता ही है। इसलिए समाज के सहयोग के अभाव की शिकायत और कुंठा को छोड़कर त्यागपूर्ण आचरण के सूत्र द्वारा उस सहयोग को जुटाने में लग जाना ही सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था के लिए वरणीय मार्ग है।

उत्तरप्रदेश के महोबा और इचौली में प्रशिक्षण शिविर आयोजित

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड प्रांत में महोबा स्थित मां चंद्रिका महिला महाविद्यालय में श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर 1 से 4 अप्रैल तक आयोजित हुआ। संतोष कंवर सिसरवादा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थी बालिकाओं से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के इस शिविर में संसार के दूषित वातावरण को छोड़कर आंतरिक शुद्धि और सौंदर्य के सृजन का अवसर हमें प्राप्त हुआ है। वर्तमान समय में ऐसा अवसर मिलना बहुत ही दुर्लभ है इसलिए यहां बताई गई प्रत्येक बात को पूर्ण मनोयोग से ग्रहण कर अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। शिविर में महोबा, अतरार माफ, जोरइया, मकरबई,

परसहा, उन्टियां, पीपरामाफ, बारी आदि गांवों से बालिकाओं ने भाग लिया। बुंदेलखंड प्रांत में ग्राम इचौली (जिला - हमीरपुर) स्थित श्री पहलवान सिंह इंटर कॉलेज में भी इसी अवधि में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन मदन सिंह बामणिया ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में हमें व्यष्टि से समष्टि और समष्टि से परमेष्टि तक की यात्रा का मार्ग उपलब्ध कराया। संघ का मार्ग हमारे स्वभाव के अनुरूप है जिस पर चलते हुए हम सहज रूप में क्षात्र धर्म का पालन कर सकते हैं। शिविर में महोबा, मौदहा, मातोंड, कबरई, बांदा, जयपुर, अकबई, खरका और सालुआ आदि गांवों से शिविरार्थी उपस्थित रहे।

चांधन प्रांत में डेल्हा जी और दयालदास जी की छतरी पर किया हवन

जैसलमेर संभाग के चांधन प्रांत में स्थित वीरवर डेल्हा जी जसहड़ोत की ऐतिहासिक छतरी पर चांधन प्रांत के स्वयंसेवकों द्वारा चैत्र शुक्ला नवमी को हवन किया गया। स्मारक पर स्वयंसेवको द्वारा स्थानीय बन्धुओं के सहयोग से साफ सफाई भी की गई। इस अवसर पर लख सिंह चांधन (प्रधान प्रतिनिधि, पंचायत समिति जैसलमेर) द्वारा डेल्हाजी स्मारक पर समिति बजट से एक सामुदायिक सभा भवन स्वीकृत होने की जानकारी दी गई। चांधन प्रांत में बडोड़ा गांव के पास स्थित ऐतिहासिक दयालदास जी खेतसिंहोत की छत्तरी पर भी प्रान्त प्रमुख के निर्देशन में चैत्र वदी नवमीं को हवन किया गया जिसमें स्थानीय समाज बंधुओं ने भी हवन में आहुतियां देकर क्षेत्र में सुख शांति और समृद्धि की मंगल कामना की।

गुड़ा चुतरा में श्री नागणेच्चाय माताजी मंदिर का 25वाँ पाटोत्सव आयोजित

सोजत के समीपवर्ती गांव गुड़ा चुतरा में श्री नागणेच्या माताजी मंदिर का 25वाँ पाटोत्सव 11 अप्रैल को संपन्न हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बाली विधायक पुष्पेंद्र सिंह ने कहा कि व्यसन मुक्त समाज आज की आवश्यकता है, हमें नशे से दूर रहना चाहिए और समाज को शिक्षित बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए। डिंगल कवि दीप सिंह रणधा ने नागणेची माता का इतिहास बताते हुए कहा कि नागणेच्या माता जी एक शास्त्रीय देवी है और आदि युग से राठौड़ वंश की कुलदेवी रही है। उन्होंने क्षात्रधर्म के बारे में जानकारी देते हुए प्रणवीर पाबूजी राठौड़ का डिंगल काव्यपाठ प्रस्तुत किया तथा सांस्कृतिक विद्रूपता के युग में संस्कार निर्माण पर बल देने की बात कही। समता राम महाराज ने समाज की एकता व बालिका शिक्षा को लेकर जागृति की बात कही। कार्यक्रम के दौरान भामाशाह राजेंद्र सिंह बागावास के सहयोग से निर्मित सभा भवन का भी लोकार्पण किया गया। आयोजन समिति के अध्यक्ष समदर सिंह ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं को भी सम्मानित किया गया। कोषाध्यक्ष खींवसिंह ने तीन वर्षों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मारवाड़ राजपूत समाज सोजत के अध्यक्ष रूप सिंह केलवाद, गिरी सुमेल संस्था के अध्यक्ष हनुमान सिंह भैंसाना, देवी सिंह ढूंढा, श्याम सिंह गुड़ा चुतरा, सुरेन्द्र सिंह केलवाद सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन भूपेंद्र सिंह सारंगवास ने किया।

वैदिक परंपरानुसार किया सादगीपूर्ण विवाह

जयपुर जिले की रायथल ग्राम पंचायत के विजयपुरा गांव के निवासी प्रवीण सिंह ने अपने दोनों पुत्रों का विवाह वैदिक परंपरानुसार एवं सादगीपूर्ण तरीके से दिन में किया। दोनों पुत्रों का विवाह एक ही दिन एक ही बारात के साथ हुआ। दोनों का ससुराल जयपुर में ही अलग अलग कोलोनी में था, बारात ने एक के ससुराल में अल्पाहार लिया एवं एक के यहां अपराह्न भोजन लिया। प्रवीण सिंह विजयपुरा श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं।

स्नेहा नेगी बनी इसरो में वैज्ञानिक

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले के सतेराखाल के सुप्री गांव की मूल निवासी स्नेहा नेगी भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) में वैज्ञानिक के पद पर नियुक्त हुई है।

वर्तमान में गढ़वाल के श्रीनगर श्रीकोट गंगानाली में निवासरत स्नेहा के पिता का उनके बचपन में ही देहावसान हो गया था एवं उनकी माता मनोरमा नेगी श्रीकोट में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता है। स्नेहा ने जीबी पंत इंजीनियरिंग कॉलेज घुडदौड़ी पौड़ी से बीटेक किया एवं वर्तमान में आईआईएससी बेंगलुरु से एमटेक कर रही हैं। वर्ष 2021 में उन्होंने गेट परीक्षा में पूरे भारत में 80वीं रैंक प्राप्त की है।

मूमल राठौड़ बनी प्रोबेशनरी ऑफिसर

नागौर के दीपपुरा गांव की निवासी मूमल राठौड़ पुत्री हरीश चंद्र राठौड़ का चयन बैंक ऑफ इंडिया में प्रोबेशनरी ऑफिसर पद पर हुआ है। मूमल श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक शंकर सिंह दीपपुरा की पौत्री है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	**प्रा.प्र.शि (बालिका)**	01.05.2025 से 04.05.2025 तक	राजपूत धर्मशाला, भादवा माता जी (जिला-नीमच, मध्यप्रदेश) कक्षा 8वीं से ऊपर की बालिकाएँ भाग ले सकती हैं। भादवा माता जी (नीमच से 14 किमी दूर स्थित है) आने के लिए नीमच से सुबह 7 बजे से बसें उपलब्ध हैं।
02.	**प्रा.प्र.शि बालक वर्ग**	09.05.2025 से 12.05.2025 तक	**बावतरा**। श्री कवाय माता मंदिर। तहसील सायला-जालोर बाड़मेर-जालोर हाई-वे पर स्थित। सम्पर्क सूत्रः गजेन्द्रसिंह कोमता-9461453360, इन्द्रसिंह सायला- 9982831051
03.	**उ.प्र.शि बालक वर्ग**	18.05.2025 से 29.05.2025 तक	**उदयपुर**। 10वीं की परीक्षा दी हो। एक मा.प्र.शि. तथा दो प्रा.प्र.शि. किया हो। झनकार, दोनों निर्देशिका, मेरी साधना व साधक की समस्याएं पुस्तकें साथ लेकर आवें। गणवेश में काली निकर सफेद कमीज या टी शर्ट, धोती, कुर्ता व केसरिया साफा लाना है। शेष सामान निर्देशिका के अनुसार लेकर आवें।
04.	**उ.प्रा.शि मातृशक्ति**	23.05.2025 से 29.05.2025 तक	**उदयपुर**। **10वीं उत्तीर्ण**। कम से कम दो शिविर किए हुए हो। सायंकालीन प्रार्थना में पारम्परिक। गणवेश-केसरिया साड़ी या पोशाक।

गजेन्द्र सिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

टोपर्स Toppers गुरु कुल

दलीप सिंह राठौड़
Army Retd. Comundo
M. 9772758445
M. 7014540001
15 वर्षों से आर्मी डिफेन्स के फिजिकल चयन का अनुभव

हॉस्टल सुविधा

भैंरू सिंह शेखावत
M. 9571955948
15 वर्षों से सैनिक स्कूल चयन से लेकर एनडीए तक चयन का अनुभव

सैनिक, मिल्ट्री, नवोदय, आरआईएमसी, देहरादून व सभी प्रकार की डिफेन्स सर्विस में चयन के लिए सर्वोत्तम स्थान (जय भारत)

सांवली सर्किल के पास, जयपुर-बीकानेर बाईपास, सीकर

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

BNB
ॐ
श्री योगेश्वर छात्रावास
कुचामन सिटी
विशेषताएं
1. कक्षा 6 से 12 वीं तक के विद्यार्थियों हेतु सीमित स्थान ।
2. अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या ।
3. शुद्ध, पौष्टिक एवं सात्विक आहार ।
4. सभी प्रमुख शिक्षण संस्थाओ के समीप स्थित ।
5. स्वाध्याय हेतु निःशुल्क लाईब्रेरी सुविधा ।
जिम्मेदारी हमारी विश्वास आपका
सम्पर्क सूत्र :
9772097087, 9799995005, 8769190974
SBI बैंक के पास, डीडवाना रोड़, कुचामन सिटी

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

राजपूताना विद्युत क्लब का होली स्नेह मिलन समारोह आयोजित

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी विद्युत विभाग राजस्थान से जुड़े हुए समाज बंधुओ का होली स्नेह मिलन समारोह दिनांक 10 अप्रैल को संघशक्ति भवन जयपुर में आयोजित किया गया जिसमें राजस्थान के विद्युत विभाग से जुड़े हुए समाज बंधुओं व मातृ शक्ति ने भाग लिया। कार्यक्रम में जयपुर डिस्कॉम के मुख्य कार्मिक अधिकारी (सेवानिवृत्त) एन.एस. नाथावत, मुख्य नियंत्रक (लेखा) वाई.एस.राठौड, उत्पादन निगम के मुख्य अभियंता राजसिंह भाटी, जयपुर डिस्कॉम के अधिशासी अभियंता जी.एस शेखावत, श्रीमती अंजू राठौड़, सहायक अभियंता गजेंद्रसिंह राठौड़, विजयसिंह राठौड, संदीप सिंह शेखावत, श्रीमती माधुरी तँवर, प्रसारण निगम के सहायक अभियंता लोकेंद्र सिंह खंगारोत, एओ बहादुर सिंह शेखावत, श्रीमती ग्रविता चौहान, शक्तिसिंह शेखावत , सुरेंद्रसिंह सांदरसर, प्रशांत सिंह तँवर, अजीत सिंह जादोन आदि वक्ताओं ने अपने विचार रखते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से आपस में परिचित होने का मौका मिलता है। हम सभी कार्मिकों को एक दूसरे से कार्यालय, विभाग संबंधित जानकारी का आदान-प्रदान करते रहना चाहिए, साथ ही तकनीकी युग में नई चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए नई तकनीकों को समझने की विशेष जरूरत है। नए ज्ञान के साथ हम विभाग में अपने समाज की विशिष्ट छाप बनाएं जिससे हमारा समाज भी गौरवान्वित हो। अपने राजकीय दायित्वों के अलावा समाज हित में भी सामाजिक कार्यक्रमों में हमारी भागीदारी सुनिश्चित करें जिससे हमारे समाज के प्रति हमारा अपनत्व का भाव बना रहे। यह भाव हमारी आने वाली संतति के चरित्र निर्माण में भी सहायक होगा। समारोह में श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हम सब एक हों, यह आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। समाज में पारिवारिक भाव निरंतर बढ़ता रहे, यह हमारा उद्देश्य होना चाहिए। आज राजपूत जाति पर चारों तरफ से आक्रमण हो रहे हैं। जो हमारे साथी हुआ करते थे वे भी आज हमारे विरोधी बन रहे हैं। हमारे गुण भी आज की परिस्थितियों में अवगुण बन रहे हैं। इसलिए बदलते हुए समय के साथ हमें भी बदलने की आवश्यकता है। इन विपरीत परिस्थितियों से लड़ने का एक ही तरीका है कि हम संगठित होकर रहें। हमारी आने वाली पीढ़ी इन परिस्थितियों से संघर्ष कर सके इसके लिए सबसे अधिक आवश्यक है उनमें क्षत्रियोचित संस्कारों का निर्माण। इस पर आज के समय में किसी का भी ध्यान नहीं है। इसीलिए संघ इस कार्य को कर रहा है। राजेंद्रसिंह बोबासर ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्य प्रणाली के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन नरेन्द्रसिंह निमेड़ा द्वारा किया गया।

झाब (सांचौर) में कार्यशाला आयोजित

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की रात्रिकालीन कार्यशाला 30 मार्च को सांचौर के झाब में स्थित श्री रणजीतसिंह महाविद्यालय में आयोजित हुई। कार्यशाला में श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने संघ एवं फाउंडेशन की कार्यप्रणाली के बारे में बताया और कहा कि फाउंडेशन क्षात्र धर्म का पालन वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप और वर्तमान साधनों के माध्यम से करने की बात करता है। उन्होंने बताया कि वर्तमान व्यवस्था में उच्च शिक्षा, रोजगार एवं राजनीति के क्षेत्र में समाज की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए फाउंडेशन कार्य कर रहा है। यह तभी संभव होगा जब समाज की सुप्त शक्ति को जागृत और एकीकृत किया जाए। इसके लिए हमारा आपसी संपर्क गहन होना चाहिए और निरंतर संवाद के द्वारा समाज में सकारात्मकता के भाव को प्रसारित करते रहना चाहिए। कार्यशाला में हिंदु सिंह दूठवा, महेंद्र सिंह झाब, कोजराज सिंह चारनीम, डॉ हितेंद्र सिंह झाब, मूलसिंह चोरा, सुरेंद्र सिंह बावरला आदि ने भी अपने विचार रखे। इस दौरान संघ के सांचौर प्रांत प्रमुख महेंद्र सिंह कारोला, गजेंद्र सिंह, राजेंद्र सिंह, पाबू सिंह, सुरेन्द्र सिंह झाब, फूल सिंह जाखड़ी, ईश्वर सिंह करड़ा, हीर सिंह किलवा, मदन सिंह केसुरी, किशन सिंह आकोली, कल्याण सिंह जानवी, सजन सिंह पांचला, जेठू सिंह सिवाड़ा, वीरेन्द्र सिंह हरियाली, स्वरूप सिंह केरिया, गजेंद्र सिंह जाविया, कृष्णपाल सिंह परावा, देवी सिंह तैतरोल, डूंगर सिंह कारोला, महेंद्र सिंह चौरा, इंद्र सिंह भूतेल, बहादुर सिंह आदि समाज बंधु उपस्थित रहे।

दुर्गाष्टमी पर सत्संग और यज्ञ का आयोजन

दुर्गाष्टमी के अवसर पर बाड़मेर के गेहूं रोड पर स्थित आलोक आश्रम में पूज्य श्री तनसिंह जी के स्मारक पर स्वयंसेवकों द्वारा सत्संग कार्यक्रम आयोजित किया गया। दक्षिण मुंबई प्रान्त की तनेराज शाखा में भी होम अष्टमी के दिन यज्ञ किया गया। प्रान्त प्रमुख देवीसिंह झलोडा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

जोधपुर शहर प्रांत का स्नेहमिलन संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के जोधपुर शहर प्रांत का स्नेह मिलन शहर स्थित तनायन कार्यालय में 3 अप्रैल को आयोजित हुआ। संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक एवं प्रांत प्रमुख भरतपाल सिंह दासपां सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। बैठक में आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर हेतु पात्र स्वयंसेवकों से संपर्क की योजना बनाई गई एवं संघशक्ति- पथप्रेरक के सदस्य बनाने के लक्ष्य तय कर दायित्व सौंपे गए।

'विक्रम-वैताल री बातां' पुस्तक का विमोचन

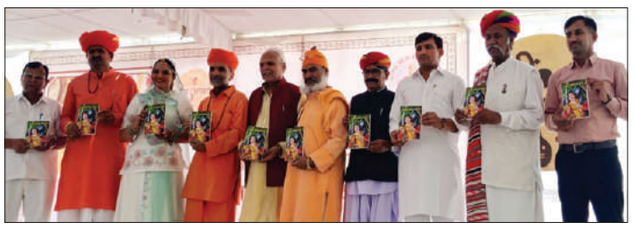

रूमादेवी फाऊंडेशन एवं ग्रामीण विकास चेतना संस्थान द्वारा हवेली रिसोर्ट बाड़मेर में आयोजित दो दिवसीय वाणी उत्सव के दौरान कवि दीपसिंह रणधा की सद्य प्रकाशित पुस्तक 'विक्रम-वैताल री बातां' का विमोचन समारोह पूर्वक किया गया। संस्थान के सचिव विक्रमसिंह ने बताया कि मायड़ भाषा एवं डिंगल काव्य संरक्षण के क्षेत्र में कवि रणधा पिछले आठ वर्षों से अपने साहित्यिक यूट्यूब चैनल 'डिंगल रसावल' के माध्यम से सराहनीय कार्य कर रहे हैं। डिंगल रसावल साहित्य श्रृंखला की यह कृति उनकी नौवीं पुस्तक है। पुस्तक विमोचन समारोह में लीलसर मठ के महंत मोटनाथ, पंचनामी मठ के महंत सूरजनाथ, चंचल प्राग मठ के महंत शंभूनाथ शैलानी, भजन गायक पद्मश्री प्रहलाद सिंह टिपानिया, पद्मश्री अनवर खां, डॉ रूमादेवी, आसूराम गुरालिया, पूर्व प्रधान ऊदाराम मेघवाल, विक्रमसिंह, डॉ आदर्श किशोर जाणी आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन कवि रमेश मिर्धा 'रसिक' और जसवंत सिंह डूडी ने किया।

दत्तानी में ऐतिहासिक छतरी का जीर्णोद्धार

दत्तानी युद्ध के नायक ठाकुर समर सिंह देवड़ा पाड़ीव की स्मृति में बनी छतरी का 3 अप्रैल को सिरोही के दत्तानी गांव में जीर्णोद्धार किया गया। इस अवसर पर छतरी पर हवन भी किया गया। चंद्रवीर सिंह लूणोल ने दत्तानी युद्ध की जानकारी देते हुए कहा कि 1583 ईस्वी में सिरोही के महाराव सुरताण देवड़ा की सेना एवं मुगल शासक अकबर की सेना में दत्तानी की धरती पर घमासान युद्ध हुआ था। इस युद्ध में सिरोही की ओर से पाडीव ठाकुर समर सिंह देवड़ा ने अद्भुत वीरता का परिचय दिया और शत्रु सेना से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। उनकी स्मृति में दत्तानी गांव के मुख्य चौराहे पर छतरी बनी हुई है जो जीर्ण शीर्ण हो चुकी थी। स्थानीय समाज बंधुओ ने आपसी सहयोग से इसका जीर्णोद्धार करवाया। इस अवसर पर गणपत सिंह सेलवाड़ा, महेंद्र सिंह मगरीवाड़ा, ईश्वर सिंह सरण का खेड़ा, भवानी सिंह भटाना, गुलाब सिंह मकावल, गणपत सिंह हमीरपुरा सहित अनेकों समाज बंधु उपस्थित रहे।

दीप सिंह रणधा को काव्य लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

साहित्य संगम बुक्स प्रकाशन मंडल फुसरो झारखंड के तत्वावधान में आयोजित ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय हिंदी काव्य लेखन प्रतियोगिता 2025 में बाड़मेर के ख्यातिनाम डिंगल कवि दीपसिंह रणधा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में देश भर के दर्जनों वरिष्ठ कवियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में रणधा की कविता 'मैं शिक्षक राष्ट्र निमार्ता हूं' के लिए उन्हें प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

सामी (सीकर) में तीन दिवसीय कार्यशाला संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की तीन दिवसीय कार्यशाला सीकर जिले के सामी गांव में स्थित श्री महाराव शेखाजी राजपूत सभा भवन में 9 से 11 अप्रैल तक आयोजित हुई। कार्यशाला का संचालन करते हुए संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने फाउंडेशन के उद्देश्यों का कार्य प्रणाली के बारे में बताया। कार्यशाला में संभागियो ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की शिक्षण प्रणाली के अनुरूप प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं पूज्य तनसिंह जी रचित समाज चरित्र पुस्तक के प्रकरण 'त्याग' पर विस्तार से चर्चा कर त्याग के वास्तविक अर्थ एवं उसे हमारे जीवन में चरितार्थ करने के लिए संघ द्वारा अपनाई गई शिक्षण प्रणाली को समझने का प्रयास किया गया। कार्यशाला के अंतिम दिन सीकर में फाउंडेशन के कार्य को गति देने की योजना बनाई। संघ के सीकर प्रांत प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर सहित सामी सरपंच सुरेन्द्र सिंह, सांवलोदा सरपंच प्रतिनिधि बृजेंद्र सिंह, सुरेन्द्र सिंह तंवरा, राजवीर सिंह किरडोली, भवानी सिंह जेरठी, धोद उप्रधान भंवर सिंह भगतपुरा, रतन सिंह छींछास, हिम्मत सिंह बेरी, विक्रम सिंह अनोखु आदि संभागी कार्यशाला में उपस्थित रहे।

सांकड़ा में ईडब्ल्यूएस प्रमाण पत्र जागरूकता शिविर का आयोजन

जैसलमेर जिले के सांकड़ा स्थित ग्राम पंचायत मुख्यालय पर 6 अप्रैल को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा ईडब्ल्यूएस प्रमाण पत्र जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में ईडब्ल्यूएस आरक्षण के प्रमाण पत्र बनाने की प्रक्रिया सहित अन्य जानकारी प्रतिभागियों के साथ साझा की गई। ईडब्ल्यूएस आरक्षण का अधिकतम लाभ लेने के प्रति समाज के युवाओं में जागरूकता लाने के उपायों पर भी विस्तृत चर्चा की गई। कार्यक्रम के संयोजक एवं फाउंडेशन के जैसलमेर जिला प्रभारी कमल सिंह भैंसड़ा ने बताया कि आगामी दिनों में इसी प्रकार के शिविर जिले में अन्य स्थानों पर भी आयोजित किए जाएंगे। ई मित्र संचालक सांवल सिंह ने आवेदनों को ऑनलाइन करने का कार्य किया। शिविर के दौरान 90 से अधिक आवेदको ने ईडब्ल्यूएस, जाति प्रमाण पत्र एवं मूल निवास प्रमाण पत्र के आवेदन किए।

नववर्ष एवं होली स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन

07 अप्रैल को क्षत्रिय कार्मिक विचार मंच के तत्वावधान में जयपुर स्थित शासन सचिवालय में क्षत्रिय कार्मिकों का नववर्ष एवं होली स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें सचिवालय एवं आस-पास स्थित कार्यालयों के क्षत्रिय कार्मिक शामिल हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सुलेखा खंगारोत (उप शासन सचिव, मुख्यमंत्री कार्यालय) ने कहा कि हमें अपने शासकीय दायित्वों का निष्ठा पूर्वक पालन करते हुए समाज को जागरूक बनाने के लिए कार्य करना चाहिए। मुख्य अतिथि श्याम सिंह चिरनोटिया (भूतपूर्व कार्मिक लोकायुक्त, सचिवालय) ने कहा कि समाज में सकारात्मकता और एकजुटता की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए आपसी संपर्क और संवाद को नियमित बनाए रखना आवश्यक है। कार्यक्रम में राजकुमार सिंह, राजेंद्र सिंह, महाराज सिंह, श्रीमती कमलेश, श्रीमती संतोष, रूपेंद्र सिंह, दिग्विजय सिंह, उपेन्द्र सिंह, प्रदीप सिंह, विजेंद्र सिंह, भंवर सिंह आदि द्वारा अपने अनुभव साझा किये गए एवं एक दूसरे को नववर्ष एवं होली पर्व की शुभकामनाएं दीं गई।

(पृष्ठ तीन का शेष)

अकोली में... श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिव प्रांत के भियाड़ गांव में भी भारतीय नववर्ष की पूर्व संध्या पर 151 दीपक की श्रृंखला द्वारा विक्रम संवत् 2082 लिखकर विक्रम संवत् नववर्ष का अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर शिव प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह भियाड़ द्वितीय ने कहा कि विक्रम संवत, भारत का पारंपरिक पंचांग है। यह चंद्र आधारित पंचांग है जिसकी शुरूआत 57 ईसा पूर्व में हुई थी। यह संवत सम्राट विक्रमादित्य ने शकों को हराने के बाद प्रारंभ किया था। वीर दुगार्दास शाखा मलाड़ (मुम्बई) में भी वीर विक्रमादित्य की जयंती मनाई गई एवं स्वयंसेवकों द्वारा एक दूसरे को विक्रम संवत के नववर्ष की शुभकामनाएं दी गई। जैसलमेर शहर के हरसिद्धि माता मन्दिर में भी चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन घट स्थापना के साथ चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य का जन्मोत्सव मनाया गया। उपस्थित सभी समाज बंधुओं ने विक्रमादिय के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया।

मगरवाडा (गुजरात) में मनाई वीर वच्छराज सोलंकी की जयंती

गुजरात के पालनपुर प्रान्त की वडगाम तहसील के मगरवाडा गांव में वीर वर वच्छराज सोलंकी की 964वीं जयंती 6 अप्रैल को मनाई गई। गाँव के अंबाजी माताजी के मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में रामसिह धोता ने वीर वच्छराज सोलंकी के जीवन चरित्र के बारे में बताते हुए उनकी वीरता के प्रसंग सुनाए। उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली का भी संक्षिप्त में परिचय दिया। संघ के पालनपुर प्रान्त प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर ने वच्छराज सोलंकी की वीरता और शौर्य के गुणों को आत्मसात कर-के क्षत्रियोचित जीवन जीने की बात कही। उन्होंने कहा कि हमें इतिहास के गौरव गान और जयकार करने मात्र से विजय नही मिलेगी बल्कि हम सभी को मिलकर एक ऐसी शक्ति का निर्माण करना होगा जिससे समाज बलवान बन सके। कार्यक्रम में स्थानीय समाजबंधुओं के साथ मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही।

चंद्रवीर सिंह देणोक को पितृशोक

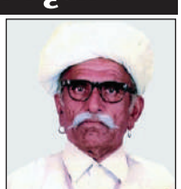

श्री दूल सिंह जी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक चंद्रवीर सिंह देणोक के पिता **श्री दूल सिंह जी पडिहार** का देहावसान 5 अप्रैल 2025 को 91 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

सेंथी व सुवावा में विशेष शाखा व सामूहिक यज्ञ का आयोजन

चित्तौड़गढ़ प्रांत में सेंथी स्थित तिरुपति नगर, बोकाड़िया पेट्रोल पंप के सामने स्थित कालू सिंह, राजेंद्र सिंह चरपोटिया के नवीन आवासीय परिसर में श्री क्षत्रिय युवक संघ की विशेष शाखा व सामूहिक यज्ञ का आयोजन 6 अप्रैल को किया गया। केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली के निर्देशन में हुए सामूहिक हवन में सभी उपस्थित जनों ने आहुतियां प्रदान की। आपसी परिचय के पश्चात साजियाली ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की गतिविधियों, संघ साहित्य, शाखा एवं शिविरों के बारे में विस्तार से बताया। आगामी दंपति शिविर चित्तौड़गढ़ एवं उदयपुर में आयोजित होने वाले माध्यमिक तथा उच्च प्रशिक्षण शिविर की जानकारी भी दी गई। पथ प्रेरक व संघ शक्ति के सदस्य बनाए गए साथ ही संघ साहित्य तथा केसरिया पताकाओं का वितरण किया गया। 30 मार्च को सुवावा (बस्सी) में भी विशेष शाखा व सामूहिक यज्ञ का आयोजन किया गया।

मनदीप सिंह माडका का निधन

मनदीप सिंह

गुजरात के बनासकांठा जिले की वाव तहसील के माडका गांव के निवासी **मनदीप सिंह** पुत्र गुलाब सिंह चौहान का देहावसान 9 मार्च को एक सड़क दुर्घटना में हो गया। वे श्री वी के वाघेला विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्यरत थे। उनके पास एनसीसी एएनओ ऑफिसर दियोदर का भी दायित्व था। एक कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में पहचान रखने वाले मनदीप सिंह श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्थानीय कार्यक्रमों में सदैव सहयोगी रहे। उनका दिल्ली में आयोजित पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह व बाड़मेर में आयोजित पूज्य तनसिंह जी स्मारक लोकार्पण समारोह के समय भी बनासकांठा जिले में प्रचार-प्रसार में सहयोग रहा।

व्यक्तिगत हित पर समाज को प्राथमिकता देना है समाज चरित्र: संघप्रमुख श्री

समाज की मांग होने पर अपने व्यक्तिगत हितों, इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, अहंकार, मान-अपमान आदि को तिलांजलि देकर समाज की मांग को पूरा करना ही समाज चरित्र है। इतिहास में वर्णन आता है कि चित्तौड़ के दूसरे साके में बाघ सिंह जी देवलिया बलिदान हुए। वे किसी कारण वश किले से निष्कासित कर दिए गए थे, लेकिन जब मातृभूमि पर संकट आया तब उन्होंने कहा कि जो मेरा कर्तव्य है, वह मेरा अधिकार है। मुझे किले में प्रवेश की अनुमति नहीं है तो कोई बात नहीं, लेकिन मुझे किले से बाहर लड़ने से कौन रोक सकता है? और वे लड़ते हुए कई सैनिकों के साथ दुर्ग की प्रथम पोल पर बलिदान हुए। यही समाज चरित्र है। संघ इसी समाज चरित्र का पाठ पढ़ाता है। पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत की एक पंक्ति है - 'चढ़ा नहीं पूजा में, तो फिर पैरों से कुचलेंगे'। इसका अर्थ है कि कोई पुष्प यदि पूजा के रूप में देवता को चढ़ेगा तो यह उसका सबसे बड़ा सम्मान, योग्यता और उपयोग है। नहीं तो वह मुरझा जायेगा, रास्ते मे गिरेगा, पैरों से कुचला जाएगा। जिस प्रकार के कार्य हमारे पूर्वज करके गए हैं, उसी मान और गौरव की परंपरा के अनुरूप हमें भी युगानुकूल साधनों का प्रयोग करते हुए क्षत्रियोचित जीवन जीना होगा। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो कुचले जाएंगे। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने चित्तौड़गढ़ स्थित ऋतुराज वाटिका में 25 मार्च को आयोजित स्नेहमिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ संस्कार निर्माण की बात करता है और संस्कारों का निर्माण करने में समय लगता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ पर लोग तरह-तरह के लांछन भी लगाते हैं, आलोचनाएं भी करते हैं। अंगुली उठाने वाले ऐसे लोग कुछ भी कहें, हमको प्रत्युत्तर देने की आवश्यकता नहीं है। समाज में यदि हम एक दूसरे को प्रत्युत्तर देने की कोशिश करेंगे तो उससे समाज में ह्रास ही होगा, निर्माण नहीं होगा। हमें निर्माण करना है इसलिए आलोचनाओं से निरपेक्ष रहते हुए अपने कर्म में लगे रहना है। किसी लकीर को छोटी करनी है, तो उसे मिटाने की आवश्यकता नहीं है, हम केवल हमारी लकीर को बड़ी कर दें। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी में विश्वास करता है। मेवाड़-मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने संघ के आगामी शिविरों की जानकारी दी। केंद्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली भी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

श्री क्षत्रिय युथ वेटिकोज फाउंडेशन का वार्षिक स्नेहमिलन

श्री क्षत्रिय युथ वेटिकोज फाउंडेशन द्वारा जयपुर में वार्षिक स्नेहमिलन कार्यक्रम 'रणभेरी' का आयोजन 10 अप्रैल को किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए फाउंडेशन के संरक्षक डॉ योगेंद्र पाल सिंह जादौन ने फाउंडेशन के उद्देश्य एवं कार्य प्रणाली के बारे में बताया एवं कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि संघ समाज में संस्कार निर्माण के कार्य में लगा हुआ है। आज समाज को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने की तो महती आवश्यकता अनुभव की जा रही है और इस ओर हम सभी प्रयास भी कर रहे हैं, परंतु इसके साथ-साथ हमारे संस्कारों में भी श्रेष्ठता होनी जरूरी है। तभी हम एक क्षत्रिय के रूप में अपना जीवन जी पाएंगे। डॉ. भवानी सिंह (पूर्व निदेशक राजस्थान पशुपालन विभाग), डॉ. नरेंद्र मोहन सिंह (पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड) डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. श्रवण सिंह राठौड़ एवं डॉ. तेज सिंह ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों द्वारा फाउंडेशन सचिव जितेंद्र सिंह बीका द्वारा संपादित पत्रिका 'वेटिकोज विजन' का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम में इस वर्ष के डॉ. सोहन सिंह जी मेमोरियल एक्सीलेंस अवॉर्ड सामाजिक क्षेत्र एवं अकादमिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले फाउंडेशन के सदस्यों को प्रदान किए गए। सुप्रसिद्ध पशु शल्य चिकित्सक स्व. डॉ सोहन सिंह राठौड़ के जीवन पर आधारित एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। मंच संचालन शिवप्रताप सिंह, रितिका राठौड़, लक्षिता राठौड़ द्वारा किया गया। डॉ. देवेंद्र सिंह जोधा ने फाउंडेशन के आगामी कार्यक्रमों की योजना के बारे में चर्चा की एवं फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. नरेंद्र सिंह राठौड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में राजस्थान के पशु चिकित्सा के दोनों विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राएं एवं शैक्षणिक स्टाफ के साथ प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में कार्यरत पशु चिकित्सक भी शामिल हुए।

चित्तौड़गढ़ में दंपती शिविर का आयोजन

चित्तौड़ का नाम सुनते ही मन में एक त्वरा, उत्साह और उमंग का जन्म होता है। इस दुर्ग की कीर्ति अद्वितीय है। हम सौभाग्यशाली हैं कि तीन दिन तक हमको यहां साधना करने का अवसर मिला है। रानी पद्मिनी के बलिदान की साक्षी इस धरती से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में त्याग और बलिदान को भरने का आप भी प्रयास करें। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने 12 अप्रैल को चित्तौड़गढ़ में स्थित श्री सांवलिया विश्रांति गृह में आयोजित दंपती शिविर के स्वागत कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि मनुष्य शरीर परमात्मा की ओर बढ़ने का साधन है। 84 लाख योनियों में केवल मनुष्य के पास यह क्षमता है कि वह परमात्मा का चिंतन, भजन आदि करके स्वयं परमात्म स्वरुप बन सकता है। इसलिए इस शरीर को शुद्ध और सात्विक बनाए रखना आवश्यक है। इन तीन दिन में हमें ऐसा वातावरण यहां निर्मित करना है कि हमें लगे ही नहीं कि हम घर से दूर हैं। हमारा पारस्परिक सहयोग इस शिविर स्थल को स्वर्ग जैसा सुंदर और आनंदपूर्ण बना सकता है। 12 से 14 अप्रैल तक आयोजित इस शिविर में राजस्थान, हरियाणा और गुजरात के विभिन्न स्थानों से 105 दंपती जोड़ों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सांभरिया में पूर्व विधायक अभय सिंह की मूर्ति का अनावरण

जयपुर के संभारिया में बस्सी विधानसभा क्षेत्र के प्रथम विधायक स्व. ठा. अभय सिंह जी राजावत (ठि. सांभरिया) की मूर्ति का अनावरण 9 अप्रैल को समारोह पूर्वक आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए चिकित्सा मंत्री राजस्थान सरकार गजेंद्र सिंह खींवसर ने कहा कि स्व. अभय सिंह जी के प्रति बस्सी क्षेत्र के निवासी आज भी सम्मान का भाव रखते हैं, यह उनकी लोकप्रियता का प्रमाण है। पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि वर्ष 1962-1967 तक जनसेवा करने वाले जननायक अभय सिंह जी की स्मृति में बनी यह मूर्ति आने वाली पीढ़ियों को भी जनसेवा की प्रेरणा देगी। कार्यक्रम में श्री राजपूत सभा के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई, जयपुर जिला प्रमुख रमादेवी चोपड़ा, पूर्व मंत्री कन्हैया लाल मीणा, चाकसू के पूर्व विधायक अशोक तंवर सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

नोट: 12 अप्रेल को महाराणा सांगा की जयंती के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए। जिनके विस्तृत समाचार अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।

बैठक व चर्चा: भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री मदन राठौड़ एवं पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया 11 अप्रेल को पृथक-पृथक समय पर संघशक्ति पहुंचे एवं माननीय संरक्षक श्री से विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

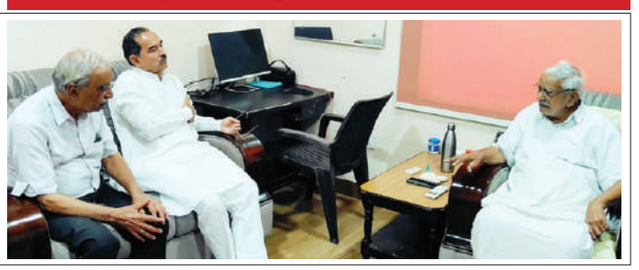

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कॉर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष- 6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक- राजेंद्र सिंह राठौड़।
Email- pathprerak1997@gmail.com Website- www.shrikys.org